



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
संज्ञा समाचार	31.1.24	5	1-5

हकृषि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म डब्ल्यू एच 1402

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 30 जनवरी (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम

उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। **डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा**

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच



हकृषि में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रूबरू होते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पोषकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में निम्नलिखित किस्मों अनुमोदित व चिन्हित की

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्मों अनुमोदित की हैं जिनमें गेहूं की डीबी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचएचबी 67 संशोधित-2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गन्ने की सीओएच 160, मक्का की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (शिशु) एवं पूसा एचक्यूपीएम 1 संशोधित, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएफओ 427, एचएफओ 529, एचएफओ 607, एचएफओ 611, एचएफओ 707, एचएफओ 806, मटर की एचएफपी 1428 व एचएफपी 1426, बाकला की एचएफबी-2, चंद्रशूर एचएलएस-4, करेला की एचकेएच 56 शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

सन्ध सूँ

दिनांक

31.1.24

पृष्ठ संख्या

8

कॉलम

3-6

हकृवि ने विकसित की गेहूँ की नई किस्म

● हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ: कुलपति कम्बोज

सच कर्हू/श्याम सुन्दर सरदाना
हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने



प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रुबरु होते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज।

बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की

अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटेश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अंतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की
बिजाई का उचित
समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगते सिंह, रेणु मुजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	31.1.24		

दैनिक भास्कर

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित दो बार की सिंचाई में ही पक कर तैयार हो जाएगी फसल

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 इजाद की है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिह्नित की गई है। इसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 की दो पानी में औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।



पत्रकारों से बातचीत करते हकूवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

100 दिन में निकल आती हैं गेहूं की बालियां

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी 14 सेंटीमीटर व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है।

इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	31.1.24	1	6-8

हकृषि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402

2 पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली है यह

हिसार, 30 जनवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402 ईजाद की गई है। 147 दिन में तैयार होने वाली यह अच्छी गुणवत्ता की फसल होगी। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। ज्ञात रहे कि विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एन.आई.ए. डब्ल्यू. 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया



गेहूं की नई किस्म बारे जानकारी देते कुलपति प्रो. काम्बोज।

नई किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। गेहूं की इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आर.एस. बैनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का अहम योगदान रहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उभर उजाला	31-1-24	2	1-7

एचएयू ने रेतीली, कम उपजाऊ क्षेत्रों के लिए विकसित की गेहूं की किस्म डब्ल्यूएच 1402

कुलपति प्रो. कांबोज बोले-हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ, नई किस्म में दो सिंचाई व मध्यम खाद देने से ही मिलेगी बढ़िया पैदावार

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित की है। यह किस्म विशेष तौर पर रेतीली, कम उपजाऊ व पानी वाले क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए विकसित की गई है। इस किस्म की खास बात यह है कि सिर्फ दो सिंचाई व मध्यम खाद देने से ही फसल की बढ़िया पैदावार मिलेगी।

चूँकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण जलस्तर नीचे जा रहा है तो यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी। एचएयू के वैज्ञानिकों की मानें तो इस किस्म से हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड



एचएयू में पत्रकारों से बातचीत करते कुलपति प्रो. कांबोज व अन्य वैज्ञानिक। संवाद

व जम्मू-कश्मीर के किसानों को भी फायदा मिलेगा। विश्वविद्यालय प्रशासन के मुताबिक अगले दो वर्षों में इसका बीज किसानों को मिलना शुरू हो जाएगा।

मंगलवार को विश्वविद्यालय में आयोजित एक प्रेसवार्ता में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि इस किस्म की औसत उपज 50

क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

यह है बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि इस किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है और बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म में पहली सिंचाई बिजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़ें निकलते समय और दूसरी सिंचाई बिजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय करने की जरूरत है।

ये हैं नई किस्म की विशेषताएं

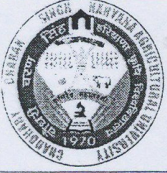
गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती हैं और 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

नई किस्म विकसित करने में डॉ. एमएस दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का अहम योगदान रहा।

ये किस्में जल्द होंगी अनुमोदित

विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार कुछ किस्में जल्द ही अनुमोदित होंगी, जिनमें सरसों की आरएच 1975, मूंग की एमएच 1762 व एमएच 1772, जई की एचएफओ 906 व मसूर की एलएच 17-19 शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	31.1.24		

दैनिक जागरण

सात राज्यों के रेतीले इलाकों में गेहूं की नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 बनेगी वरदान

जागरण संवाददाता, हिसार : छह राज्यों के रेतीले इलाके यानी जिन इलाकों में पानी की



कमी है वहां बेहतर गेहूं की फसल ली जा सकेगी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) ने

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित कर ली है। इस किस्म को विकसित करने में विज्ञानियों को आठ साल से ज्यादा समय लग गया। इस नई किस्म में सिर्फ दो बार किसान पानी लगाकर 50 से 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर फसल ले सकते हैं।

यह फसल हरियाणा ही नहीं अपितु देश में पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के मैदानी भाग के लिए चिह्नित की गई है। हकृवि के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा दो पानी

- दो बार पानी देने पर 68 क्विंटल तक होगी फसल की पैदावार
- हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

व मध्यम खाद से अधिक उपज देने वाली यह किस्म ईजाद की गई है।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि रेतीले इलाकों में गेहूं की बेहतर फसल की पैदावार को लेकर रिसर्च चल रही थी। हकृवि विज्ञानियों की तरफ से इस सालों की रिसर्च के बाद इस किस्म को लांच किया गया। हरियाणा सहित मैदानी भाग के इलाकों में इस फसल की किस्म को उगाने से पानी की बचत होगी। अभी किसान रेतीले इलाके में गेहूं की फसल को करीब छह बार पानी देते हैं। उसकी फसल तब जाकर 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है। इस नई किस्म में दो बार पानी लगेगा और पैदावार भी ज्यादा होगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि मूमि	31-1-24	9	2-8

हरियाणा के साथ
अन्य राज्यों के
किसानों को भी
मिलेगा लाभ : प्रो.
काम्बोज

हरिमूमि न्यूज ▶ हिसार

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402, दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली विकसित नई किस्म

पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी

राष्ट्रीय स्तर पर निकाली

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटेश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन गू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।



हिसार। प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रूबरू होते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बिजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बिजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू
एच 1402 किस्म की
विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पोष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग
के इन वैज्ञानिकों की
मेहनत का है परिणाम

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	30.01.2024	--	--

हकृषि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म डब्ल्यू एच 1402

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 30 जनवरी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अंतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केंजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पोष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।



गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाला, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा। कड़क

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में निम्नलिखित किस्में अनुमोदित व चिन्हित की

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की हैं जिनमें गेहूं की डीबी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचएचबी 67 संशोधित-2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गन्ने की सीओएच 160, मक्का की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (शिशु) एवं पूसा एचक्यूपीएम 1 संशोधित, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएफओ 427, एचएफओ 529, एचएफओ 607, एचएफओ 611, एचएफओ 707, एचएफओ 806, मटर की एचएफपी 1428 व एचएफपी 1426, बाकला की एचएफबी-2, चंद्रशूर एचएलएस-4, करेला की एचकेएच 56 शामिल हैं। इनके अलावा छः किस्में जिसमें गेहूं की डब्ल्यू एच 1402, सरसों की आरएच 1975, मूंग की एमएच 1762 व एमएच 1772, जई की एचएफओ 906 और मसूर की एलएच 17-19 शामिल हैं ये जल्द ही अनुमोदित हो जाएंगी। साथ ही 15 अतिरिक्त किस्में चिन्हित हो चुकी हैं जिनमें मक्के की एचक्यूपीएम-28 (चारा) व एचक्यूपीएम-29 (अनाज), गन्ने की सीओएच 176, जेई की एचएफओ 915, एचएफओ 917 एवं एचएफओ 1014, बाकला की एचएफबी-3, धान की एचकेआर 49, काबली चने की एचके 5, अश्वगंधा की एचएजी-1, मूंगफली की जीएनएच 804 और भिंडी की एचबी 13-11-3, मक्का की अंतर संस्थागत तीन किस्में आईएमएचएसबी 17 आर 16, आईएमएचएसबी 17 आर 17 व एबीएसएच 4-2 किस्में चिन्हित कर ली गई है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	30.01.2024	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म, कई राज्यों को मिलेगा लाभ

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 इजाजत की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर वगैरह मैदानी भाग आता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.आर. वाय्मोजे ने यह ज्ञानवहारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 किस्टल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 किस्टल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला लुआ, धुव रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जों की अच्छी किस्म एनआरईएच 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई



किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेनैल्सी, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए एकीकृत स्तर पर निवृत्त की गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध मात्रा 90, फासफोरस 60, पोटेश 40, जिंकमसल्फेट 25 मिलीग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन थू-जल अधिक केलन के कारण नीचे जा रहा है। अतः यह

नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वादाव सक्षित होगी। डब्ल्यू एच 1402 की बिजार्ड का उचित समय व बीज की मात्रा कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजार्ड व उचित समय अंकुर के अंतिम सातह से नवंबर का फलत समार है तथा बीज की मात्रा 100 मिलीग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म

की दो पानी जिसमें फलत पानी बीजार्ड के 20-25 दिन बाद सिंचार जड़े निवृत्तते समय व दूसरा पानी बीजार्ड के 80-85 दिन बाद खलियां निवृत्तते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. फन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में खलियां निवृत्तती है तथा 147 दिन में पक्का तैयार हो जाती है। इस किस्म की खलियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिणे वर छुना न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टेरोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोक तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पीठिकाता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम

में डॉ. एम.एस. कलत, ओमि बिस्वाई, विक्रम सिंह, दिव्या पोग्रेट, योगेश कुमार, एसके फजुल, सोमबीर, आरएस बनेजल, भात सिंह, रंगु मुंजल, प्रियंका, पूजा गुा व फन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

विश्वविद्यालय नेगत 3 वर्षों में निपु किस्में अनुमोदित व चिह्नित की

विश्वविद्यालय नेगत 3 वर्षों में निहिन फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की है जिनमें गेहूं की डीबी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, जजारा की एचएचबी 67 सीडीपी-2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गने की सीआरएच 160, मूंग की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (शिरु) एवं पूसा एचएमपीएम 1 संशोधित, चार की सीएसबी 53 एक, एचजे 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएमओ 427, एचएमओ 529, एचएमओ 607, एचएमओ 611, एचएमओ 707, एचएमओ 806, मटर की एचएमपी 1428 व एचएमपी 1426, ककता की एचएमपी-2, चरसूर एचएमएस-4, कोरला की एचएमएच 56 शामिल है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	30.01.2024	--	--

हकृषि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म



सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।
कुलपति प्रो. श्री.आर. काम्योज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ले जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीएल राउआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जौन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किस्म भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है।

नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

अंतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी। विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है।
इस टीम में डॉ. एम.एस. दत्तल, ओपी विन्नेई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगट, योगेंद्र कुमार, एसके पट्टना, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्त व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	30.01.2024	--	--

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार (चिराग टाइम्स)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूँ को एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईनाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए विकसित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.

बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूँ को एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म को दो पानी में दो औंसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीसा रसुआ, भूरा रसुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले ज़ोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5



प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूँ की डब्ल्यू एच 1402 की बिजई का उचित समय व बीज की मात्रा कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाटूज ने बताया कि गेहूँ को एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम

साप्ताह से नवंबर का पहला साप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजई के 20-25 दिन बाद सिखर जड़े निकलने समय व दूसरा पानी बीजई के 40-45 दिन बाद खालियाँ निकलने समय देने की जरूरत है।

गेहूँ एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूँ को एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है।

इस टीम में डॉ. एस.एस. दलाल, ज्योती बिस्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या प्रोपट, योगेन्द्र कुमार, एमके पाटूजा, योगेश्वर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रमेश मुजाल, प्रियंका, पूजा गुला व प्रबल कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा। विश्वविद्यालय ने पा 3 वर्षों में

विश्वविद्यालय किस्म अनुमोदित व पंजीत कीजिये। एचके 28 (पारा) व एचकेएम-29 (अनाज), एचके सीओएच 176, जेई की एचएफओ 915, एचएफओ 917 एवं एचएफओ 1014, बाकला की एचएफओ-3, पान की एचकेआर 49, कायली चने की एचके 5, अन्नगंध की एचएओ-1, मुंगफली की आईएचएच 804 और चिंटी की एचपी 13-11-3, मका की अंतर संस्थागत तीन किस्म आईएमएचएचपी 17 अंतर 16, आईएमएचएचपी 17 अंतर 17 व एकोएचएच 4-2 किस्म पंजीत कर ली गई है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृत धारा	30.01.2024	--	--

हकूचि ने विकसित की गेहूँ की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म डब्ल्यू एच 1402



हिसार में अमृत धारा के लिए फोटो जर्नलिस्ट मनोज मुन्हाजी के साथ संजीव मेहता - चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 इंजोड की है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए विकसित की गई है। इस में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कर्मनाथ ने आज एक पत्रकार सार्वी में यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही अंतिम उपज 50 किंटा प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 किंटा प्रति हेक्टेयर तक हो पा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रंगुआ, मूला रंगुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोंग की उपज देती है।

किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 की 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। फलतः बताया कि गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म

रसीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध मात्रा 80, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान गाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन मू-पाल अधिक सेंगल के कारण पीने जा रहा है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए सरदात साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा कृषि महाविद्यालय के अधीनस्थानी डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद हिसार जहाँ निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बाधिया निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूँ एवं जौ अनुभाग के उपजारी डॉ. फलतः बताया कि गेहूँ की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म

दिन में बाधिया निकलती है तथा 147 दिन में पकवार हो जाती है। इस किस्म की बाधिया लंबी (34 सेंटीमीटर) व खाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाग पोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केली/एचएल) लोह तत्व (37.8 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पोष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूँ एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दत्त, ज्योति बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेश कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, अरएस बेनीवाल, नमन सिंह, देवू मुजाल, प्रियंका पूजा गुप्ता व चमन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

विश्वविद्यालय नेगत 3 वर्षों में डिलीम फसलों की 23 किस्में अनुसंधान की हैं जिनमें गेहूँ की डीडी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचएचबी 67 संशोधित-2, सरसो की आरएच 8434 एवं आरएच 1706, जवा की एचबी 8, गन्ने की सीजेएच 160,

मक्का की अंतर संस्वागत पूसा एचएम 4 (किंगु) एवं पूसा एचएमबीएम 2 संशोधित, ज्वार की सीएचबी 53 एच, एचबी 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएचबी 427, एचएचबी 529, एचएचबी 607, एचएचबी 611, एचएचबी 707, एचएचबी 808, मटर की एचएचबी 1426 व एचएचबी 1426, बाजरा की एचएचबी-2, चंदशूर एचएचएच-4, कोंकल की एचएचबी 56 शामिल हैं। इनकी अलावा छ किस्मों जिसमें गेहूँ की डब्ल्यू एच 1402, सरसो की आरएच 1975, मूंग की एचएच 1762 व एमएच 1772, जई की एचएचबी 906 और मसूर की एचएच 17-19 शामिल हैं वे जलज ही अनुसंधान हो जाएगी। साथ ही 15 अतिरिक्त किस्में विकसित हो चुकी हैं जिनमें मूंग की एचएचबीएम-28 (परा) व एचएचबीएम-29 (अजगज), गन्ने की सीजेएच 176, जई की एचएचबी 815, एचएचबी 917 एवं एचएचबी 1014, बाजरा की एचएचबी-3, धान की एचएचबी 49, काली चने की एचबी 5, अन्धका की एचएचबी-1, मूंगफली की जीएचएच 804 और मिडी की एचबी 13-11-2, मक्का की अंतर संस्वागत डीन किस्में आईएमएचएचबी 17 और 16, आईएमएचएचबी 17 और 17 व एबीएचएच 4-2 किस्में विकसित कर ली गई हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगत क्रांति	31.01.2024	--	--

अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति

हिसार : विनोद गांधी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है।



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	31.01.2024	--	--

दैनिक सवेरा

अंधेरे से उजाले की ओर... टाइम्स

हफ़वि ने विकसित की गेहूँ की अधिक उपज वाली नई किस्म

● कुलपति बोले, डब्ल्यू एच 1402 का हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

सोमरा नूर/सुरेंद्र सोही
हिसार, 30 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुपान के द्वारा दो फने व प्रथम खंड में अधिक उपज देने वाली गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईनाद को र्द है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए विकसित की र्द है, जिसमें पंचांग, हरिकण्ठ, रामसम्पन्न, दिग्गै, शिवाकास प्रदेत, उत्तराखण्ड व जम्मू-काश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.अर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुपान के वैज्ञानिकों को टीम ने गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित

की है। इस किस्म को दो फने में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ले जा सकता है। जनेनी बताया कि यह किस्म फलतः रुरुअ, भुआ रुरुअ व अन्य क्षेत्रों के प्रति रोनापी है। साथ ही यह किस्म कम फने वाली जेन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म देसीली, कम उपजकाल व कम फने वाली क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर विकसित र्द है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नवम्बर 90, फासफोरस 60, पोटाश 40, विकसालपेट 25 किलोग्राम प्रति



हफ़वि में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान चकारों से रुबरु होते हुए कुलपति प्रो. बी.अर. काम्बोज।

हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की गती है। अंतः यह नई किस्म कम फने वाली क्षेत्रों के लिए सारदार साक्षर होगी।
डब्ल्यू एच 1402 की विशेषता
का उचित समय व बीज की मात्रा कृषि महाविद्यालय के अधिकृत डा. एच.के.पट्टनाय ने बताया कि गेहूँ

की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषता का उचित समय अक्षुब्ध के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को दो फने मिलने परत फने बीजार्द के 20-25 दिन

बाद तैयार जड़े निकलते समय व दूसरा फने बीजार्द के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की सफरत है।

गेहूँ की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएँ

गेहूँ एवं जौ अनुपान के प्रभारी डा. फवन ने बताया कि गेहूँ की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकलती है तथा 147 दिन में चक्रवार तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व सतत रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके निरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दान मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, 37.6 प्रतिशत

लोह (77.7 केजी/एचएल) तथा ताल (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूँ एवं जौ अनुपान के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम : विश्वविद्यालय के गेहूँ एवं जौ अनुपान के वैज्ञानिकों को टीम ने गेहूँ की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डा. एच.एस. टालत, ओपी विरनेई, विक्रम सिंह, दिवा चौधरी, सोनेन्द कुमार, एसके पट्टनाय, सोमवीर, अरुण बेनेवाल, भरत सिंह, रेनु मुंजाल, जितेश, पूव गुप्त व फवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अग्र योगदान रहा।